अंक 25

वर्ष-7वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

सफलता का सप्तम वर्ष

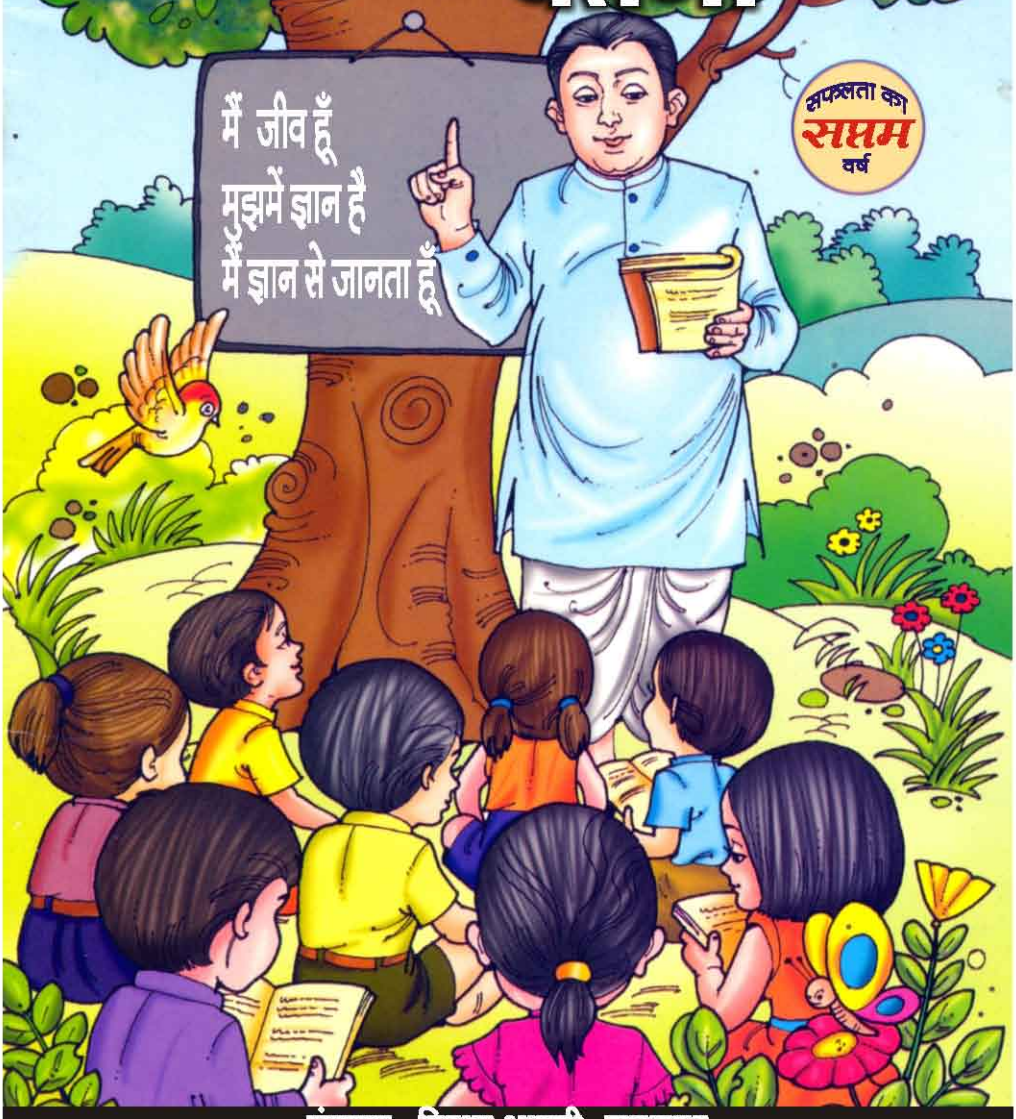

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय

"चहकती चेतना"

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1	संपादकीय	1
2	हमारे तीर्थक्षेत्र	2
3	कॉस्मेटिक का रहस्य	3-4
4	प्रेरक प्रसंग	5
5	आयुकर्म/पाकिस्तान में जैन मंदिर	6
6	फेसबुक	7
7	ब्राम्हीलिपि में णमोकार मंत्र	8
8	कैसी क्रूरता है यह	9
9	वह कौन थी	10
10	सत्यकथा-शील की रक्षा	11
11	पारले मैंगोबाइट/साबूदाना	12
12	मेरी भावना	13-14
13	जे कर्मपूरब किये खोटे....	15
14	केलेण्डर	16-17
15	सुन्दरता की चाह में.....	18
16	बाल प्रतिभा	19
17	कविता / शोक	20
18	स्वदेशी है या विदेशी	21
19	हमारे अभिन्न सहयोगी	22
20	समाचार मंजरी	23-25
21	समयसार	26
22	कॉमिक्स टी.वी.	27-30
23	साहसी लोग	31
24	जन्मदिवस	32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106

हमारे तीर्थ क्षेत्र –

सिद्धक्षेत्र श्री सिद्धवर कूट

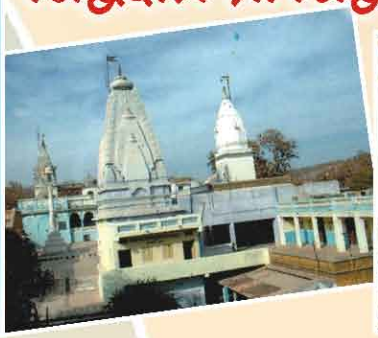

मध्यप्रदेश के खण्डवा जिले की ओंकारेश्वर तहसील में नर्मदा और कावेरी नदियों के किनारे स्थित सिद्धवर कूट नाम का अत्यंत रमणीय सिद्धक्षेत्र है। इस क्षेत्र की खोज 1935 में हुई और एक भट्टाकरजी को स्वप्न आने पर काफी खोज करने पर जमीन की खुदाई में यह विशाल जिनमंदिर मिला।

इस महान तीर्थ से दो चक्रवर्ती और दश कामदेव मोक्ष गये हैं. साथ ही साढ़े तीन करोड़ मुनिराजों ने यहाँ से निर्वाण प्राप्त किया है। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण इस रमणीय क्षेत्र में संवत् 1545 में प्रतिष्ठित भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा विराजमान है। साथ ही यहाँ विशाल मानस्तंभ के साथ 13 भव्य जिनमंदिर विराजमान हैं। यहाँ से सनतकुमार, वत्सराज, कनकप्रभ, मेघप्रभ, विजयराज, श्रीचंद, नलराज, बलिराज, वसुदेव और जीवंधरकुमार नाम के कामदेव मोक्ष पधारे हैं और मघवा और सनतकुमार नाम के दो चक्रवर्ती मोक्ष गये हैं।

इस क्षेत्र आवास एवं भोजन हेतु सर्वसुविधायें उपलब्ध हैं।

यह सिद्धक्षेत्र इंदौर से लगभग 80 किमी और खण्डवा रेल्वे स्टेशन से लगभग 75 किमी की दूरी पर है। सिद्धवर कूट क्षेत्र से सिद्धक्षेत्र पावागिरि उज्न 100 किमी, बावनगजा 80 किमी, गोम्मटगिरि इंदौर 80 किमी, बनेड़ियाजी 40 किमी, मक्सीजी 70 किमी की दूरी पर स्थित हैं।

कॉस्मेटिक का रहस्य

आपके चेहरे और शरीर के श्रृंगार के लिये बाजार में अनेक क्रीम और अन्य सौन्दर्य प्रसाधन उपलब्ध हैं पर क्या आप जानते हैं कि आपके श्रृंगार के लिये कितने मासूम और निर्दोष जानवरों को मारा जा रहा है। आपके चेहरे की नकली सुन्दरता कितने प्राणियों की चीख पर निर्भर है। आपके द्वारा सुन्दरता का नाटक कितने प्राणियों को मौत की ओर भेज रहा है। जानिये इन बातों को और स्वयं निर्णय कीजिये–

1. **मंहगे परपयूम का प्रयोग आप शरीर** के सुंगध के लिये करते हैं। यह व्हेल

मछली से निकलने वाला अवशिष्ट पदार्थ है. यह पीला और सख्त होता है, इसका निर्माण उसके स्पर्म से होता है. यह स्पर्म व्हेल द्वारा किसी सख्त पदार्थ निगलने के बाद व्हेल की रक्षा करता है। इसकी अलग तरह की गंध होने के कारण इसका प्रयोग परपयूम बनाने में किया जाता है इसे समंदर का सोना कहा जाता है। इस पदार्थ के 400 ग्राम की कीमत लगभग 5 लाख रुपये है।

2. **यदि आप होठों को सुन्दर दिखाने के लिये लिपिस्टिक** का प्रयोग करते हैं तो

ये भी जान लें कि अधिकांश लिपिस्टिक कीड़ों से बनती हैं. सेन्ट्रल और साउथ अमेरिका में कैक्टस के पौधों पर पाये जाने वाले इस कीट को कोचिनियल बीटलस के नाम से जाना जाता है. इन कीटों को जब कुचला जाता है तो इनके पेट से गहरे लाल रंग की डाई निकलती है। इंसानों के प्रयोग में सुरक्षित माने

जाने वाली इस डाई का लिपिस्टिक व आई शैडो में भरपूर मात्रा में प्रयोग किया जा रहा है। इन कीटों को पैदा करने लिये हजारों एकड़ में कैक्टस के पौधों की खेती की जाती है। साथ ही मरे हुये जानवरों के तेल या पैट्स का प्रयोग साबुन और आई मेकअप के कई सामानों में किया जाता है. इन मरे हुये जानवरों को स्लाटर हाउस कत्लखानों व चिड़ियाघरों से एकत्रित किया जाता है।

3. नेलपालिश का प्रयोग नाखून की सुन्दरता बढ़ाने के लिये किया जाता है। इसमें मछलियों के शल्कों का प्रयोग किया जाता है जिससे विशेष प्रकार की चमक दिखाई देने लगती है।

4. डियोडेंट में डाइनामाइट – डाइनामेट का प्रयोग सीधे रूप से तो किसी कॉस्मेटिक में नहीं किया जाता परन्तु इसके एक महत्वपूर्ण अवयव का प्रयोग डियोडेंट में किया जाता है।

5. मॉस्चराइजर में घोंघे का रस – कई प्रसिद्ध कंपनियों के मॉइस्चराइजर्स में इसका प्रयोग किया जाता है. वास्तव में यह घोंघे के शरीर से निकलने वाले मृत सेल होते हैं जिन्हें वह अपने बचाव में निकालता है।

7. लिपबाम – शार्क मछली के लीवर से निकलने वाले तेल का प्रयोग लिपबाम व सनस्क्रीन जैसे कॉस्मेटिक में किया जाता है। इसके कारण से शार्क मछलियों का शिकार निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

8. शेविंग क्रीम में भेड़ का वूल वैक्स – शेविंग क्रीम में लैनोलिन पदार्थ का प्रयोग किया जाता है जिसे भेड़ के शरीर से निकाला जाता है. लैनोलिन डालने से शेविंग करते समय इंसान के गाल की चमड़ी मुलायम हो जाती है.

साभार – दैनिक भास्कर समाचार पत्र

जैन रामायण का प्रभाव

क्षुल्लक श्री गणेश प्रसादजी वर्णी बुंदेलखण्ड के प्रसिद्ध जैन संत थे। वे बचपन से जैन नहीं थे। उनके विद्या गुरू श्री मूलचंदजी प्रतिदिन उन्हें गांव के बाहर श्री रामचन्द्रजी के मंदिर ले जाया करते थे। वे प्रतिदिन वहाँ रामायण को सुनते थे। उनके घर के सामने एक जैन मंदिर थे। मंदिर के सामने पेड़ के नीचे प्रतिदिन पुराण प्रवचन होता था। वर्णीजी वहाँ भी प्रतिदिन पुराण प्रवचन का लाभ लिया करते थे। एक दिन वहाँ प्रवचन में त्याग का प्रकरण आया जिसमें रावण के द्वारा परस्त्री सेवन के त्याग का उल्लेख आया। इस प्रकरण को सुनकर बहुत से जैन भाइयों ने आजीवन रात्रि भोजन त्याग का नियम ले लिया। उन्हें देखकर वर्णीजी ने भी पूरे जीवन के लिये रात्रि भोजन का त्याग कर दिया।

एक बार रात्रि में राम मंदिर में प्रसाद से पेड़े दिये गये तो वर्णीजी ने अपने गुरू से कहा मैंने तो रात्रि भोजन का त्याग कर दिया है। यह सुनकर गुरुजी बहुत गुस्सा हुये परन्तु वर्णीजी ने अपना नियम नहीं तोड़ा। वर्णीजी जैन रामायण ही सत्य लगती थी। इस तरह जैन रामायण सुनकर वर्णीजी ने दिगम्बर जैन धर्म को स्वीकार किया और आत्मसाधना के साधना के साथ सम्पूर्ण जीवन जिनधर्म का प्रचार करते रहे।

लक्ष्मण का वचन

राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने वनवास के समय वनमाला से विवाह कर लिया। विवाह के बाद जब वे वनमाला को छोड़कर जाने लगे तो वनमाला ने पूछा कि आप कितने समय बाद लौटकर आयेंगे? लक्ष्मण ने प्रतिज्ञापूर्वक कहा – मैं 12 वर्ष में लौटकर आऊँगा। लेकिन वनमाला को संतोष नहीं हुआ. तब लक्ष्मण ने कहा 'वनमाले! यदि मैं 12 वर्ष में लौटकर न आऊँ तो मुझे रात्रि भोजन का पाप लगे.' लक्ष्मण के इस जबाब को सुनकर वनमाला संतुष्ट हो गई। इस घटना से रात्रि भोजन के पाप का विचार करना चाहिये।

जिसकी आयु शेष है, मार सके न कोय

यह फोटो है जयपुर निवासी 17 वर्षीय राहुल साहनी की ! राहुल जवाहर नगर में अपनी बाइक से जा रहा था। बाइक फिसलने के कारण वह गिरा और पास ही रखे लोहे के सरियों में जा घुसा. दो सरिये उसके पेट में घुस गये. सरिये लम्बे होने के कारण उन्हें मशीन से काटा गया और पोर्टिस अस्पताल में उसका ऑपरेशन कर उसके पेट से सरिये निकाले गये. अब राहुल बिल्कुल स्वस्थ है. है ना उदय का कमाल.

पाकिस्तान में जैन मंदिर

6 दिसम्बर 1992 को भारत में अयोध्या में बाबरी मस्जिद को तोडा गया इसका बदला लेने के लिये पाकिस्तान में 8 दिसम्बर 1992 को दिगम्बर जैन मंदिर को नष्ट कर दिया गया.

फेसबुक से बरबाद होता बचपन

आज इंटरनेट के युग में हमारे बच्चे भी आधुनिक जीवन शैली के अभ्यासी होते जा रहे हैं। आधुनिक साधन सुविधा ये बढ़ा रहे हैं परन्तु स्वास्थ्य को बरबाद कर रहे हैं। फेसबुक को प्रयोग करने वालों की संख्या करोड़ों हो गई है। इसमें 15 वर्ष से कम आयु के लाखों बच्चे शामिल हैं। सबसे ज्यादा असर बच्चों की आंखों पर हो रहा है। घंटों कम्प्यूटर पर चैटिंग करने के कारण इन्हें ग्लूकोमा, कैटरेक्ट, भेंगापन, डायबिटीज, रेटिनोथैपी और इन्फेक्शन जैसे बीमारियां हो रहीं हैं। बच्चों को स्कूल में ब्लैकबोर्ड साफ नहीं दिखने जैसी समस्यायें आ रहीं हैं। इससे बच्चों को मोतियाबिन्द होने की आशंका है। बच्चों को अधिकतर आउटडोर गेम जैसे क्रिक्रेट, फुटबाल, बैडमिन्टन जैसे खेल खेलने चाहिये परन्तु अधिकांश समय कम्प्यूटर के सामने बैठने से बच्चों में मोटापे समस्या भी बढ़ रही है. इसके लिये निम्न सावधानियाँ अत्यंत आवश्यक हैं।

1. बच्चों पर निगरानी रखें कि वे अपना समय रचनात्मक कार्यों में लगायें।
2. बच्चों को इंटरनेट के अधिक उपयोग से होने वाली समस्याओं को समझायें।
3. समय पर आंखों की जांच करवायें।
4. आंख सम्बन्धी किसी भी समस्या को गंभीरता से लें और विशेषज्ञ डॉक्टर को दिखायें।
5. कम्प्यूटर का प्रयोग आवश्यकतानुसार ही करें।

सावधानी ही सुरक्षा का सर्वोत्तम उपाय है.

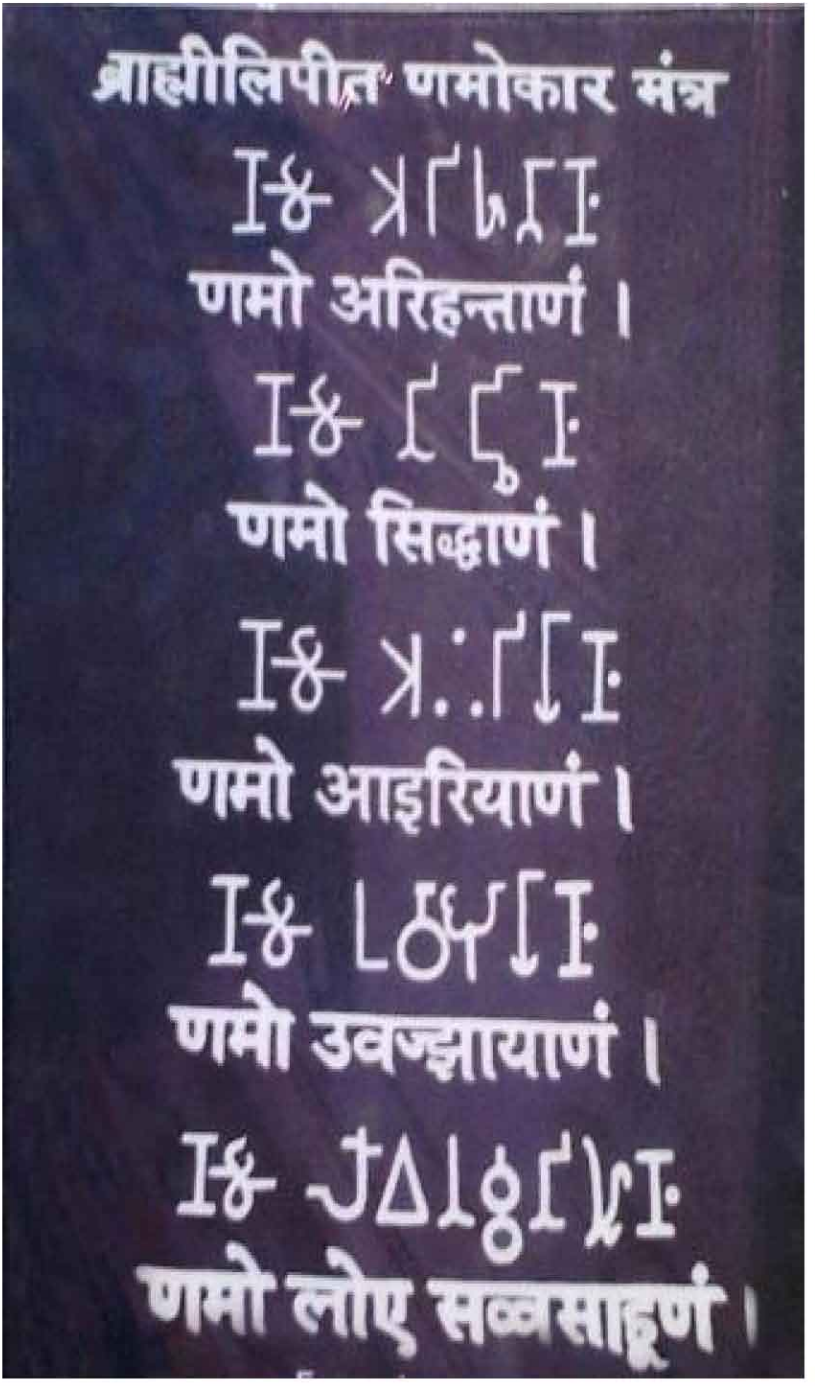
ब्राह्मीलिपीत णमोकार मंत्र
णमो अरिहन्ताणं ।
णमो सिद्धाणं ।
णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं ।
णमो लोए सव्वसाहूणं ।

कैसी क्रूरता है यह

यह कोई चित्रकारी नहीं है. इस व्यक्ति ने मात्र अपने नाम प्रसिद्धि के लिये इस तस्वीर को बनाया. इसमें रंगों का नहीं 8 हजार 524 तितलियों को मारकर चिपकाया गया है. मात्र रिकार्ड के लिये।

दूसरी फोटो में इस महिला ने मात्र लोगों को दिखाने के लिये न जाने कितने मोरों के पंखों से बना यह ड्रेस पहना है। वाह रे फैशन...

शाकाहारी शेर

पाकिस्तान के मुलतान नामक शहर में नबाब मुजफ्फर खां का शासन था। उनकी उदयराम जैन से अच्छी मित्रता थी. एक बाद नबाब ने एक शेर का बच्चा पकड़ लिया और उसे घर लाकर उदयरामजी से कहा कि सेठ साहब ! आप तो पूरे अहिंसक हैं यदि इस शेर के बच्चे को भी अहिंसक बना दो तो हम तुम्हें सच्चा जैन समझें। उदयरामजी उस शेर के बच्चे को घर ले आये और प्रतिदिन उसे दूध पिलाने लगे। धीरे–धीरे उसे खीर खिलाने लगे। फिर तो उस शेर को अनाज खाने का अभ्यास हो गया. जब शेर का बच्चा तीन वर्ष का हो गया तो उसे नबाब के पास ले जाकर कहा – लीजिये हुजूर ! आपका यह शेर जैन बन गया है। नबाब ने उस शेर को मांस खिलाना चाहा तो शेर ने अपना मुंह दूसरी ओर कर लिया. यह देखकर नबाब आश्चर्यचकित रह गया.

वह कौन थीं

1. वह कौनसी नारी थी जिसका दूसरा नाम जानकी था ?

उत्तर– सती सीता।

2. वह कौनसी नारी थी जिनके बाल एक सेठानी ने कटवा दिये थे?

उत्तर– सती चंदनबाला।

3. वह कौनसी नारी थी जिसका पुत्र मोक्षगामी था और जिसका नाम चक्रवर्ती के नाम पर रखा गया था ?

उत्तर– कैकयी।

4. वह कौनसी नारी थी जो महावीर स्वामी की दादी थी ?

उत्तर– श्रीमति।

5. वह कौनसी नारी थी जिसे मुनिराज की निन्दा के पल में कोढ़ हो गया और ठीक होने पर उन्हीं मुनिराज से आर्यिका दीक्षा ले ली ?

उत्तर– रूप कुण्डली।

6. वह कौनसी नारी थी जिसके शील के प्रभाव से काला चन्दोवा सफेद हो गया था?

उत्तर– विजया सेठानी।

7. वह कौनसी नारी थी जिसने प्रतिज्ञा की कि जब तक अपने नगर में स्थित जिनालय बनवाकर दर्शन नहीं करुंगी तब तक कुछ भी नहीं खाउँगी ?

उत्तर– श्री चन्द्रा।

8. वह कौनसी नारी थी जो अपने तोते से भरत चक्रवर्ती की प्रशंसा किया करती थीं ?

उत्तर– कुसुमा रानी।

9. वह कौनसी नारी थी जिन्हें गजकुमार मुनिराज की कथा सुनकर वैराग्य हो गया ?

उत्तर– शिवा देवी . (तीर्थंकर नेमिनाथ की मां)

10. वह कौनसी नारी थी जिसने पिता और पुत्र के दीक्षित होने पर आर्यिका दीक्षा ले ली थी ?

उत्तर– मंदोदरी।

11. वह कौनसी नारी थी जो प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान का दर्शन गज मोती चढ़ाकर किया करती थी?

उत्तर– मनोवती।

12. वह कौनसी नारी थी जिससे लक्ष्मण ने कहा था कि यदि मैं 12 वर्ष में लौटकर न आऊँ तो मुझे रात्रि भोजन करने का पाप लगे?

सत्यकथा-

शील की रक्षा

आज समाज में शील सुरक्षित रखना भी अत्यंत कठिन हो गया है. फिल्मों के बढ़ते दुष्प्रभाव, टीवी पर आने वाले गंदे कार्यक्रमों और सामाजिक वातावरण में अधिक सावधानी से रहने की आवश्यकता हो गई है। पहले के समय की नारियां अपने शील की रक्षा के लिये अपने प्राण तक दे देतीं थीं। परन्तु आज लड़कियों के वस्त्र ही अलग कहानी कहते हैं।

भारत में औरंगजेब का शासन चल रहा था। औरंगजेब तो अन्यायी राजा था ही उसके नीचे के मुस्लिम अधिकारी भी जनता को बेवजह परेशान करते थे। जब ये अधिकारी अपने जिले में घूमने निकलते थे तो प्रजा में हाहाकार मच जाता था. लोग अपने घरों में छिप जाते थे. ये अधिकारी जनता के धन को लूटकर ले जाते थे, मंदिरों को तोड़ देते थे और सुन्दर कन्याओं को उठाकर ले जाते थे।

एक बार बिहार प्रान्त के एक जिले का शासक मिर्जा अपने सिपाहियों के साथ नाव में बैठकर गंगा नदी में घूम रहा था। उसने किनारे पर कुछ लड़कियों को स्नान करते हुये देखा। उसमें से भगवती नाम की लड़की अत्यंत सुन्दर थी। उसने अपने घर पर आकर उसके भाई ठाकुर होरिल सिंह को बुलवाया और कहा कि मैं आपकी बहन को अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ। यह सुनकर होरिल क्रोध में आ गया और बोला कि तूने दुबारा यह बात कही तो मैं तेरा सिर काट लूंगा। मिर्जा के आदेश पर होरिल को पकड़कर जेल में डाल दिया गया। जब यह समाचार घर पहुँचा तो होरिल की पत्नी बहुत दुःखी हुई। अपनी भाभी को दुःखी देखकर भगवती ने कहा कि भाभी ! आप दुःखी न हों, भैया को मैं छुड़वाकर लाऊँगी। भगवती ने अपना संदेश मिर्जा को भिजवाया कि आप मेरे भाई को छोड़ दें, आपकी बेगम बनना तो मेरा सौभाग्य है। यह सुनकर मिर्जा ने होरिल को छोड़ दिया।

भगवती की इच्छा पर उसे पालकी में बिठाकर मिर्जा के पास ले जाया जा रहा था। रास्ते में एक तालाब के पास भगवती ने सिपाहियों से कहा कि मुझे प्यास लग रही है। मैं तालाब से पानी पीकर आती हूँ। सिपाहियों ने पालकी नीचे रख दी और भगवती पानी पीने के बहाने तालाब की ओर गई और बहुत ऊँचाई से पानी में छलांग लगा दी। सिपाहियों ने भगवती को निकालने के लिये जाल मंगाया तब तक भगवती के प्राण निकल चुके थे। भगवती की मृत्यु का समाचार सुनकर मिर्जा को बहुत दुःख हुआ। भगवती ने अपने शील और परिवार के सम्मान की रक्षा के लिये अपने प्राण दे दिये।

राज एक्सप्रेस
पारले मैंगोबाइट टॉफियों में जहर!
एफडीए ने लगाई बिक्री पर रोक
छापे में पकड़ा दो करोड़ का माल सीज

पारले मैंगोबाइट टॉफियों में जहर

बच्चों को बहुत पंसद आने वाली पारले मैंगोबाइट में जहर पाया गया है। एक दैनिक अखबार में प्रकाशित समाचार के अनुसार सरकारी संस्था एफडीए ने पारले कंपनी की रायगढ़ और भिवंडी की फैक्ट्रियों में छापे मारे और लगभग 2 करोड़ का तैयार माल जब्त किया। अधिकारी के अनुसार पारले मैंगोबाइट टॉफी में लैक्टिक एसिड मिलाया जा रहा था. यह एसिड अत्यंत खतरनाक है. इस फैक्ट्री से 8000 किलो लैक्टिक एसिड भी पकड़ा गया। सरकारी नियम के अनुसार लैक्टिड एसिड का प्रयोग प्रतिबंधित है. तो बच्चा सावधान हो जाइये और अपना स्वास्थ्य और धर्म बचाइये।

साबूदाना

शाकाहार नहीं क्या मांसाहार है !

आमतौर पर साबूदाना को शाकाहार माना जाता है. व्रत, उपवास में फलाहार के रूप में इसका बहुत प्रयोग होता है. साबूदाना किसी पेड़ पर नहीं होता बल्कि यह कासावा या टैपियो नामक कन्द से बनाया जाता है। कासावा वैसे तो दक्षिण अमेरिका पौधा है. लेकिन यह अब यह तमिलनाडु, केरल, आन्ध्रप्रदेश और कर्नाटक में भी उगाया जाता है. केरल में इस पौधे को कप्पा कहा जाता है. इसकी जड़ काटकर इसे बनाया जाता है. इस कन्द में स्टार्च भरपूर मात्रा में पाया जाता है. इसमें पानी डालकर महीनों तक हेलोजन लाइट में गलाया और सड़ाया जाता है। इससे उसमें सफेद रंग के करोड़ों लम्बे कीड़े पैदा हो जाते हैं. फिर धूप में इसे सुखाया जाता है. इसके बाद इसे मशीनों की सहायता से छन्नियों पर डालकर गोलियां बनाईं जातीं हैं जैसे हमारे घरों में बूंदी बनाई जाती है. सावधान !साबूदाना खाने में मांसाहार का महापाप है.

मेरी भावना

रचनाकार – पं.जुगलकिशोर जी मुख्तार

1

जिसने राग-द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान दिया,
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ।
बुद्ध, वीर, जिन हरि, हर ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो,
भवित भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो ।।1।।

He, Who has subdued his passions and desires, who has realised the secret of the Universe in entirety; Who has discoursed upon the teachings of Right Path of Liberation for the benefit of all in a quite unselfish manner;

2

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं,
निज-परके हित-साधन में, जो निशदिन तत्पर रहते हैं ।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ।।2।।

Those who have no longings left for sense produced pleasure; Who are rich in the quality of equanimity; Who are day and night engaged in encompassing the good of all - their own as well as of others; Who undergo the severe penance of selfeffacement without filching - such Enlightened Saints, Varily, conquer the pain and misery of mundane existence !

3

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उनहीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ।
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूं ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, सन्तोषामृत पिया करूं ।।3।।

May I always associate with such aforesaid Holymen May my mind be constantly occupied with their contemplation; May the longing of my heart be always to tread in their footsteps; May I also never cause pain to any living being; May I never utter untruth ; and May I never covet the wealth or wife of another ! May I ever drink the nectar of contentment!

4

अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या - भाव धरूं,
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूं,
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं ।।4।।

With pride may I never be elated, angry may I feel with none; The sight of another's luck may not make me envious with his lot; May my desire be ever for dealings fair and straight, and may my heart only delight in doing good to others to the best of my abilities all the days of my life!

शेष अगले अंक में ....

जे कर्मपूरब किये खोटे सहे क्यों नहीं जियरा

जीव जैसे कर्म करता है उसे उन परिणामों के अनुसार वैसा ही फल भोगना पडता है.चाहे वह गति कोई भी हो इन जीवों को देखिये और पापों से डरिये अपना जीवन स्वाध्याय और जिनेन्द्र भक्ति में लगाइये जिससे आपका भविष्य ऐसा न हो.

1. इतना मोटापा कि घर से बाहर निकलना भी असंभव हो गया।
2. शरीर से बाहर निकलती पेड़ की शाखायें।
3. उम्र कम मगर चेहरा वृद्ध के समान। 4. इतना छोटा सा कछुआ।
5. छः पैरों वाला भेंड़। 6. छः पैर वाली बत्तख। 7. दो मुंह वाली बिल्ली।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

CALENDER 2013

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

JULY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

आज ही सदस्य बनिये। संपर्क : 9300642434

E-mail : chehaktichetna@yahoo.com

सुन्दरता की चाह ने बदसूरत बना दिया

विश्व के विभिन्न देशों की प्रसिद्ध हस्तियां जिन्होंने अपने चेहरे की सुन्दरता बढ़ाने के लिये प्लास्टिक सर्जरी करवाई और चेहरा हो गया बदसूरत.

बाल प्रतिभायें

छोटी उम्र में बड़े कमाल

जिन धर्म के संस्कार कुछ तो पूर्व संस्कार से मिलते हैं और कुछ पारिवारिक संस्कारों से. भोपाल निवासी श्री मोहित बडकुल और श्रीमति शिल्पा की सुपुत्री कु. श्राविका तीन वर्ष की नन्हीं सी उम्र में ही कमाल कर रही है. परिवार के धार्मिक वातावरण के फलस्वरूप श्राविका को तीर्थंकरों के नाम, पांच पाप, चार कषाय जैसी अनेक महत्वपूर्ण बातें याद हो गई हैं. साथ ही वह बच्चों की धार्मिक वीडियो सी.डी. अत्यंत उत्साह से देखती है. उसे लगभग 20 बाल कवितायें अच्छी तरह याद है. नन्हीसी उम्र में श्राविका वीतरागी देव और कुदेव का अन्तर समझती है. उसकी धार्मिक चंचलतायें निश्चित ही उसके उज्जवल भविष्य की ओर संकेत कर रहीं हैं. कु. श्राविका श्री देवेन्द्रजी बड़कुल की पोती है. संस्था बालिका के धर्ममय और सुखद भविष्य की मंगल कामना करती है।

बाल अक्षत बाल

सम्मेदशिखरजी की पावन भूमि पर आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव में ज्ञान कल्याणक का पावन दिन था. प्रातः मुनि पार्श्वनाथ के आहार दान की तैयारी चल रही थी. पांडाल में लगभग 7 – 8 हजार की संख्या में साधर्मी उपस्थित थे. अचानक एक लगभग 8 वर्ष का बालक विद्वान की वेशभूषा में मंच पर आकर बैठ गया. लोग कुछ समझ नहीं पाये कि ये क्या हो रहा है. और उस बालक ने पण्डित दौलतरामजी रचित छहढाला के छन्द और उसके अर्थ कहना प्रारंभ कर दिये.

यह बालक मुम्बई निवासी अक्षत जैन था. जो धाराप्रवाह रूप से और निर्भीकता से छहढाला के छन्द और अर्थ कह रहा था. पूरी सभा इस बालक की प्रतिभा को देखकर दंग रह गई. पूरी सभा ने जोरदार तालियों के माध्यम से अक्षत का प्रोत्साहन दिया और पंचकल्याणक के प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री ने इस बालक की प्रशंसा करते हुये अक्षत के परिवार को धन्यवाद दिया और उसकी मां को सन्मानित कराया.

ज्ञातव्य है अक्षत मुम्बई में पाठशाला का नियमित छात्र है और श्री नितेश जैन का पुत्र है.

कविता

विराग शास्त्री, जबलपुर

सीताजी ओ सीता जी
प्यारी प्यारी सीताजी
लव कुश को क्यों छोड़ा
राम से क्यों मुंह मोड़ा
क्यों बन गईं तुम माताजी
हमको भी बतलाना जी
सीता – लव–कुश को ना छोड़ा
न राम से मुंह को मोड़ा
प्रीत स्वयं से ही लागी
हो गई मैं वैरागी
सिद्धपुरी को जाऊँगी,
लौट ना भव में आऊँगी।।

चिर वियोग

1. अलीगढ़ में प्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान श्री कैलाशचंदजी जैन (बुलंदशहर), अलीगढ़ का 101 वर्ष की आयु में दिनांक 19 दिसम्बर को अत्यंत शांत परिणामों से निधन हो गया। पण्डित कैलाशचंद जी ने अपना संपूर्ण जीवन जिनवाणी के प्रचार–प्रसार और आत्मकल्याण में समर्पित किया। अत्यंत निस्पृहवृत्ति धारक, स्पष्ट वक्ता, कुशल प्रवचनकार, गहन तत्व अभ्यासी के धारक पण्डित कैलाशचंद जैन तीर्थधाम मंगलायतन के सर्जक श्री पवन जैन के पिता थे।

2. आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर के अभिन्न सहयोगी नागपुर निवासी श्री नरेश सिंघई और डॉ. सुरेश जैन की माताजी श्रीमति सुशीला देवी मुलामचंदजी सिंघई का 5 दिसम्बर को 78 वर्ष की आयु में देह वियोग हो गया। आप नियमित स्वाध्यायी, प्रसन्न चित्त, साधर्मी वात्सल्य आदि गुणों से पूर्ण थीं।

संस्था परिवार दिवंगत आत्माओं के अतिशीघ्र पंचमगति प्राप्ति की कामना करता है।

कैसे पता करें खाने-पीने की कोई चीज स्वदेशी है या विदेशी

BY INDIAN BUY INDIAN

मित्रों खाने-पीने की कोई वस्तु शाकाहारी है या मांसाहारी ये जानने के लिए आप लाल और हरा निशान देखते है। पर क्या आप जानते है ? कि कोई वस्तु स्वदेशी है या विदेशी ? मतलब उस वस्तु के लिए दिया गया पैसा भारत में रहेगा या बाहर जाएगा यह जानने के लिए आप वस्तुओं पर अंकित **Bar Code** देखें !!

आप बस 890
याद रखें !

अगर पहले तीन नंबर है -

890	-	MADE IN INDIA
690, 691,692	-	MADE IN CHINA
00-09	-	USA and CANADA
30-37	-	FRANCE
40-44	-	GERMANY
471	-	TAIWAN
49	-	JAPAN
50	-	UK

हमारी नवीन योजनायें
आपका सहयोग आमंत्रित

धार्मिक बाल गीतों और कविताओं की पुस्तक -संस्था द्वारा विशेष रूप से बच्चों के लिये गाये जाने वाले धार्मिक बाल गीतों, भजनों और कविताओं की एक पुस्तक तैयार की जा रही इसका कार्य प्रारंभ हो गया है। इस पुस्तक में लगभग 200 बाल कविताओं, भजनों, गीतों का संग्रह होगा। इस पुस्तक को सचित्र और रंगीन प्रकाशित करने की भावना है। इसके प्रकाशन में लगभग 40,000/- का व्यय अनुमानित है।

धार्मिक ड्राइंग बुक - संस्था बाल वर्ग में रचनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन के उद्देश्य एवं बाल संस्कार शिविरों में विशेष गतिविधि के रूप में उपयोग हेतु धार्मिक प्रेरणादायी चित्रों से पूर्ण धार्मिक ड्राइंग बुक प्रकाशित कर रही है। इन चित्रों को बच्चे अपनी रुचि अनुसार मनपंसद रंगों से सजा सकेंगे।

इन दोनों प्रकाशनों हेतु आपका आर्थिक सहयोग आमंत्रित है। आपकी छोटी राशि भी इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये बड़ा सहयोग बनेगी। सभी सहयोगियों के नाम पुस्तक में प्रकाशित किया जायेंगे। यदि कोई संस्था इसकी प्रकाशक बनना चाहे तो उस संस्था का प्रकाशक के रूप में नाम प्रकाशित किया जायेगा। आप अपनी राशि '' आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर'' के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें - **9300642434. E-mail - chehaktichetna@yahoo.com**

समाचार मंजरी

खेल–खेल में सीखिये धर्म
बच्चों के लिये तीन कम्प्यूटर गेम तैयार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर ने बाल वर्ग में धार्मिक संस्कार देनेके लिये अब तक 15 धार्मिक वीडियो सीडी तैयार की हैं। इसी क्रम में अब नया प्रयोग करते हुयेअब जैन धर्म आधारित तीन कम्प्यूटर गेम तैयार किये गये हैं –

1. हमारे तीर्थंकर – इस गेम में आप चौबीस तीर्थंकरों और नव देवताओं का परिचय प्राप्त कर सकते हैं प्रश्न–उत्तर पर आधारित इस गेम में रोचक चित्रों के माध्यम से तीर्थंकरों और नव देवताओं का परिचय करवाया गया है. इस गेम के निर्माण में श्री नितिन जैन नांगलराया दिल्ली का मुख्य आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है.

2. जिनशासन के रंग – इस दूसरे गेम में अनेक धार्मिक चित्रों दिये गये है कम्प्यूटर स्क्रीन पर इन चित्र के साथ कलर प्लेट भी दिखाई देगी. इन चित्रों को आप अपने मनपसंद रंगों से सजा सकते हैं इस गेम के निर्माण में दिल्ली निवासी श्रीमति निधि साकेत जैन का मुख्य आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

3. चित्र वाटिका – इस तीसरे गेम में एक धार्मिक चित्र कम्प्यूटर स्क्रीन पर दिखाई देगा। कुछ समय बाद ये चित्र बिखर जायेगा और आपको माउस की सहायता से चित्र के अलग – अलग हिस्सों को जोड़कर फिर से आपको वैसा ही चित्र बनाना है. इसमें बीस चित्रों का समावेश किया है। इस गेम के निर्माण में गुजरात के तलौद निवासी श्री प्रासुक अतीत भाई देवेन्द्र भाई शाह का मुख्य आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है.

इन सारे गेम को मुम्बई के दर्शन आर. मेहता ने तैयार करने में अथक परिश्रम किया है। संस्था समस्त सहयोगियों के प्रति धन्यवाद और कृतज्ञता ज्ञापित करती है। इन समस्त गेम को प्राप्त करने के लिये आप हमसे संपर्क कर सकते हैं।

बाल ब्रम्हचारी श्री रवीन्द्रजी 'आत्मन्' की आध्यात्मिक रचनाओं की नवीन सी.डी. तैयार

अध्यात्मिक प्रवक्ता, निस्पृह व्यक्तित्व ब्र. रवीन्द्रजी जैन ने अनेक पूजन और आत्म स्वरूप प्रेरक गंभीर रचनायें की हैं। ये रचनायें आत्मा के गंभीर रहस्यों को बतलाने के साथ प्रेरणा और नैतिकता का संदेश देती हैं। इनमें से अनेक रचनायें नित्य पठनीय हैं। आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा इन रचनाओं में से 10 रचनाओं की एक मधुर संगीतमय आडियो सी.डी. तैयार की गई है। इसमें सांत्वनाष्टक, मंगल प्रभात, संकल्प, जिनमार्ग आदि का समाहित हैं। इस सी.डी.के निर्माण में श्रीमति लता सत्येन्द्र जैन, अकलतरा, श्री खेमचंद जैन सौरभ शास्त्री खैरी और श्री नरेन्द्र जैन, अकलतरा का मुख्य सहयोग प्राप्त हुआ है। आप इन समस्त सी.डी. को प्राप्त करने के लिये संस्था से संपर्क कर सकते हैं।

सिद्धक्षेत्र सोनागिर में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न

साढे पांच करोड़ दिगम्बर मुनिराजों की निर्वाण स्थली श्री सोनागिर सिद्ध क्षेत्र में दिनांक 11 दिसम्बर से 18 दिसम्बर तक श्री सिद्धचक्र विधान संपन्न हुआ. दिल्ली वाली धर्मशाला में आयोजित इस विधान का आयोजन कृष्णा नगर, दिल्ली निवासी श्री इन्द्रसेन जी जैन के द्वारा किया गया. इस विधान में दिल्ली के ही लगभग 100 साधर्मियों ने सहभागिता की. विधान के मध्य में जिनमंदिर पर कलशारोहण भी किया गया. इस अवसर पर ब्र. नन्हेभाई जैन सागर, पण्डित श्री विराग शास्त्री जबलपुर, श्री अभिनय शास्त्री जबलपुर के मांगलिक व्याख्यान हुये. विधान की सम्पूर्ण विधि श्री विराग शास्त्री, जबलपुर द्वारा संपन्न कराई गई.

भोपाल में नव तीर्थ ज्ञानोदय का निर्माण कार्य प्रांरभ

भोपाल – विदिशा हाइवे पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, भोपाल द्वारा भव्य श्री ज्ञानोदय तीर्थ का निर्माण कार्य प्रांरभ हो गय। 9 दिसम्बर को निर्माण कार्य प्रांरभ होने के उपलक्ष्य में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर शान्ति विधान का आयोजन किया गया. तत्पश्चात् सभा में ज्ञानोदय तीर्थ के स्वरूप की जानकारी दी गई. इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का प्रवचन भी हुआ. प्रवचन के पश्चात् समयसार वीडियो का विमोचन पण्डित शिखरचंदजी जैन, विदिशा द्वारा किया गया. कार्यक्रम की सम्पूर्ण विधि पण्डित श्री संजय शास्त्री मंगलायतन, श्री विराग शास्त्री जबलपुर, श्री गौरव शास्त्री इंदौर, श्री सुनील धवल भोपाल द्वारा संपन्न कराई गई.

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर की वेबसाइट शीघ्र

संस्था की गतिविधियों की जानकारी सकल समाज तक पहुँचाने हेतु संस्था की बेवसाइट का निर्माण किया जा रहा है। इसमें संस्था द्वारा तैयार समस्त वीडियो, साहित्य व अन्य कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी। साथ चहकती चेतना के सभी पूर्व प्रकाशित अंक इस वेबसाइट उपलब्ध रहेंगे।

साथ अन्य आवश्यक वेबसाइट की लिंक सुविधा भी उपलब्ध होगी. इस बेवसाइट को आप www.sarvodayachetna.com के नाम से जनवरी के अंत से देख सकते हैं।

चित्र वाटिका गेम सम्बन्धी विशेष सूचना

सम्मेदशिखर पंचकल्याणक में विक्रय की गई चित्र वाटिका गेम की कुछ सी.डी. तकनीकी कारणों से खराब हो गई थीं. यदि आपको इस सी.डी. में कोई शिकायत है तो आप अपने मोबाईल में Game और पूरा नाम पता लिखकर 9300642434 पर एस.एम.एस. करें, हम आपको नई सी.डी. निःशुल्क भेजेंगे। अनजाने में हुई इस भूल के लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं.

सहयोग के लिये आभार

11000/– श्री इन्द्रसेन जैन आनंद जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली की ओर से सोनागिर में सिद्धचक विधान सम्पन्न करने के उपलक्ष्य में आगामी योजनाओं हेतु प्राप्त।

4000/– वाशिम निवासी श्री दीपक आई. गंगवाल ने 10 निर्धन बच्चों को चहकती चेतना पत्रिका की तीन वर्ष की सदस्यता निशुल्क प्रदान करने के लिये।

3000/– कनकप्रभा सुखानंदजी पाटनी, वाशिम की ओर से तत्वप्रचार की नवीन गतिविधियों में प्राप्त।

2000/– गुप्त दान तत्व प्रचार हेतु वाशिम महा. के एक युवा साधर्मी की ओर से।

1000/– श्रीमति राजश्री ठोलिया, गोंदिया महा. की ओर से प्रचार–प्रसार हेतु।

500/– श्री सुशांत जैन, खड़गपुर की ओर से प्राप्त।

500/– श्री जवेरचंद जी जैन, ग्राट रोड, मुंबई के सुपुत्र चि. कमलेश का शुभ विवाह वसई निवासी सौ.दीपिका के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में प्राप्त।

समयसार वीडियो का गरिमामय लोकार्पण

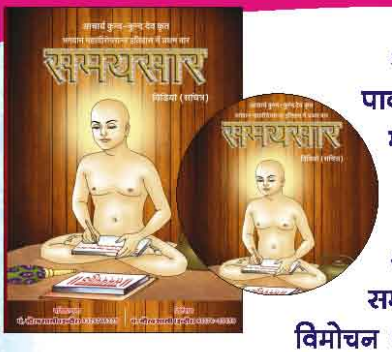

शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी पावन भूमि पर आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर दिनांक 25 नवम्बर को चिरप्रतीक्षित समयसार वीडियो का लोकार्पण पूरी गरिमा के साथ किया गया. आचार्य कुन्दकुन्द के इस महान परमागम समयसार की 415 गाथाओं के वीडियो का विमोचन श्री हितेनभाई शेठ मुम्बई, श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद, श्री अक्षयभाई दोशी मुम्बई के करकमलों से हुआ. इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभय कुमारजी शास्त्री, श्री अजितजी बडौदा, श्री विजयजी बडजात्या आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे. श्री कुन्दकुन्द कहान यंग जैन एसोसिएशन इंदौर, जैन अध्यात्म एकेडमी नार्थ अमेरिका एवं आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में निर्मित यह वीडियो लगभग 9 घंटे की तीन डीवीडी में है. इसके निर्माण में श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, श्रीमति मीनल जयेश ठोलिया अमेरिका, श्री रमेश ए. बोरीचा मुम्बई, श्रीमति लीना जैन घाटकोपर मुम्बई, श्री अशोक जैन इंदौर, श्री कमल साकेत बड़जात्या मुम्बई, श्री राजकुमार शाह इंदौर, श्री प्रमोद कुमार जैन छिन्दवाड़ा आदि महानुभावों का अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ है. इस वीडियो की परिकल्पना श्री सौरभ शास्त्री इंदौर, संयोजन श्री विराग शास्त्री जबलपुर एवं निर्देशन श्री गौरव शास्त्री इंदौर द्वारा किया गया है. इस वीडियो को प्राप्त करने के लिये आप संस्था से संपर्क कर सकते हैं।

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

शिरोमणि परम संरक्षक	–	1 लाख रूपये
परम संरक्षक	–	51 हजार रूपये
संरक्षक	–	31 हजार रूपये
परम सहायक	–	21 हजार रूपये
सहायक	–	11 हजार रूपये
सहायक सदस्य	–	5 हजार रूपये
सदस्य	–	1000/–

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि.जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें। आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं।

टीवी का संदेश

चित्रकथा
● खलील खान

छोटू पूरे दिन टीवी देखता रहता था. हर समय वह टीवी के कार्यक्रमों में खोया रहता था.

इस तरह के कार्यक्रम देखदेख कर छोटू चिड़चिड़ा हो गया था.

छोटू को केवल मारधाड़ वाली फिल्में और शोरगुल वाले गीत पसंद आते.

छोटू के मम्मीडैडी उसे समझाते, पर उस पर कोई असर न होता

एक दिन छोटू के मम्मीडैडी बाहर गए थे. छुट्टी का दिन था. छोटू घर में अकेला था.

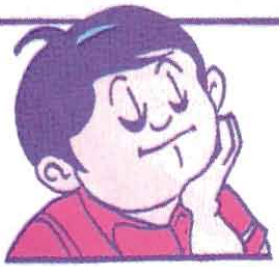

हमेशा की तरह छोटू ने टीवी के बटन घुमाने शुरू किए, पर टीवी में कुछ आया नहीं.

आज टीवी को क्या हो गया है. लाइट भी तो आ रही है.

लगता है टीवी खराब हो गया.

अचानक टीवी स्क्रीन पर एक चेहरा आया, वह बोलने लगा -

पहले तो छोटू घबरा गया. फिर हिम्मत जुटा कर बोला -

छोटू, मैं टीवी हूं. आज मैं तुम से कुछ कहना चाहता हूं.

तुम तो टीवी हो. तुम रोज बोलते हो, फिर इस में नई बात क्या है?

हां, आज तुम्हारी आवाज जरूर अलग लग रही है. बोलो, क्या कहना चाहते हो?

तुम ही नहीं छोटू, देश के लाखोंकरोड़ों बच्चे घंटों टीवी से चिपके रहते हैं. इसलिए मैं कुछ कहना चाहता हूं.

हाथ में रिमोट आते ही तुम चैनल बदलते रहते हो. मैं झटके खाता रहता हूं.

खामोश रह कर मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करता हूं. और बदनाम भी मैं ही होता जाता हूं.

कुछ लोग बिना जानेबूझे हमें 'इडियट बाक्स' भी कहते है. मगर हम मूर्ख नहीं हैं.

मूर्ख तो वे हैं, जो चौबीसों घंटे शोरगुल वाले गीत और मारधाड़ वाली फिल्में देखते रहते हैं. या फिर अंधविश्वास वाली सीरियल्स देखते रहते हैं.

फिर हम क्या देखें, टीवी भैया?

ऐतिहासिक, भौगोलिक सीरियल्स, विज्ञान कथाएं, महान व्यक्तियों की कहानियां, या सामान्य ज्ञान बढ़ाने वाले कार्यक्रम देखने चाहिए.

यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो सभी तुम्हारे टीवी को 'इडियट बाक्स' कहेंगे. क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा?

बिलकुल नहीं टीवी भैया. मैं वादा करता हूं आज से मैं वही कार्यक्रम देखूंगा, जो जानकारी बढ़ाने वाली हो.

शाबाश.

प्रेरणा देते साहसी लोग

जीवन में पाप उदय कितना भी भयानक क्यों न हो
लेकिन यदि मन दृढ़ता हो तो कोई कार्य मुश्किल नहीं है।
जीवन हौसले से जिया जाता है।
आइये इनसे सीखें कि संकट में कैसे जिया जाता है –

1. मेरे हाथ नहीं तो क्या हुआ, पैर तो हैं। वृक्ष लगाती एक बालिका।

2. स्वाभिमान ही मेरा जीवन है. हाथ न होने के बावजूद मुंह से मेंहदी लगाकर अपनी आजीविका चलाती यह बालिका.

3. कला किसी की मोहताज नहीं होती. बिना हाथों के मूर्ति पर कलाकारी करती यह महिला. कमाल की हिम्मत.

4. आश्चर्य. अपंग होने के बावजूद कितनी तल्लीनता से पेन्टिंग करती नन्हीं सी बालिका. जीवन के रंग बाकी है।

जन्म दिवस

तत्व आपका नाम है, हो आत्म तत्व का ज्ञान।
जैन धर्म मंगल मिला, पाये गुरु कहान।।
तत्व श्रेयांस वाघर, जामनगर गुज. 06.08.12

आगम ही इक शरण है, आगम सबका प्राण।
आगम के पथ पर चलो, मिले मुक्ति वरदान।।
आगम अजय वाघर, जामनगर गुज. 12.10.12

जिनवाणी का अंश भी, देता सौख्य महान।
जन्म मरण का नाश करो, बनो सिद्ध भगवान।।
अंश अजय वाघर, जामनगर गुज. 12.10.12

रीति अपनी रीति यह, जैन धर्म पहचान ।
सदाचार और संस्कार से, बढ़े आपकी शान ।।
रीति नितिन पाटनी, वाशिम 19.10.2012

जीतिका आपका नाम है, रखो धर्म का मान ।
सारा जग वंदन करे, करना ऐसा काम ।।
जीतिका भावेश जैन, उदयपुर 16.12.12

कनक प्यारी सी बेटी हो, हो जिनशासन श्रद्धान।
आत्म की अनुभूति कर, हो शिवपुर में विश्राम।।
कनक अंकित बाफना, रायपुर 20.12.12

अविरल आपका नाम शुभ, अविरल आतमराम।
आतम का श्रद्धान करो, पाना मुक्ति धाम।।
अविरल अतुल कुमार जैन 18.02.2013

जैन धर्म की शान हैं, महावीर भगवान।
नेमिल इनके मार्ग से, बनो वीर भगवान।।
नेमिल संदीप शाह, थाणे 14 मार्च 2013

अब एक फोन लगाइये और घर बैठे सी.डी. पाइये

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा विगत 12 वर्षों से बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रेरक सामग्री का निर्माण कर रहा है। इस कम में अब तक बाल गीतों, पूजन, जिनधर्म की कहानियां, एनीमेशन आदि की 15 वीडियो सी.डी. तैयार की गईं हैं। साथ दो धार्मिक कविताओं की पुस्तक, एक कथा की पुस्तक, दो गेम भी तैयार किये हैं। अन्य योजनाओं पर कार्य चल रहा है।

हमारी संस्था के प्रतिनिधियों के द्वारा प्रत्येक स्थान पर सी.डी. लेकर पहुंचना संभव नहीं है और पूरे देश के अनेक साधर्मी किसी बड़े धार्मिक कार्यकम के अवसर पर ही यह सामग्री प्राप्त कर पाते हैं। हमने आप तक सी.डी. एवं अन्य सामग्री पहुंचाने के लिये के लिये दो योजनायें तैयार की हैं।

पहली योजना में आप हमारे मोबाइल नम्बर पर हमें संपर्क करें, हम आपको आपके द्वारा मांगी गईं सी.डी. तुरन्त भेज देंगे और आप सी.डी. की राशि का भुगतान हमारे बैंक खाते में अपने नजदीकी बैंक शाखा में कर सकते हैं। तो देर किस बात की ? मोबाइल उठाइये और हमसे बात करके पाइये संस्था द्वारा तैयार सी.डी. और साहित्य।

दूसरी योजना के अंतर्गत आप हमारी संस्था के स्थायी सदस्य बन सकते हैं। स्थायी सदस्यता के लिये आपको 5000/– रू. की राशि जमा करना होगा। इसके अंतर्गत आपको 15 वर्षों तक ''चहकती चेतना'' पत्रिका प्राप्त होगी।

साथ ही संस्था द्वारा आगामी 15 वर्षों में निर्मित होने वाली समस्त सामग्री आपको नि:शुल्क भेजी जायेगी। तो देर मत कीजिये। बार–बार सी.डी. मंगाने और सदस्यता शुल्क भरने की झंझट से मुक्ति पाइये।

संपर्क सूत्र

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434, 09373294684, E-mail : chehaktichetna@yahoo.com

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा प्रस्तुत

अब बालकों के लिये धार्मिक कम्प्यूटर गेम तैयार

खेल–खेल में सीखिये धर्म बच्चों के लिये आसान

पाईये अनोखा उपहार

आज ही प्राप्त कीजिये

1. हमारे तीर्थंकर

- चौबीस तीर्थंकरों और नव देवताओं पर आधारित प्रश्न–उत्तर गेम
- रोचक चित्रों के माध्यम सेतीर्थंकरों और नव देवताओं का परिचय

2. जिन शासन के रंग –

- अनेक धार्मिक चित्रों मनपसंद रंगों सेसजाइये
- बच्चों की रचनात्मकता बढानेवाला अनोखा गेम

3. चित्र वाटिका –

- अनोखा पजल गेम
- 20 बिखरे धार्मिक चित्रों कोजोडिये

विशेष

पंचम काल के समर्थ आचार्य कुन्दकुन्द देव रचित

समयसार

सम्पूर्ण गाथाओं के विषय पर आधारित एक अलौकिक वीडियो

समयसार पढिये, देखियेऔर अनुभव कीजिये

✲ आत्म चेतना

बाल ब्रम्हचारी श्री रवीन्द्रजी जैन 'आत्मन्' की आध्यात्मिक रचनाओं का मधुर संकलन

✲ विदाई की बेला

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के प्रसिद्ध उपन्यास का आडियो संस्करण जीवन जीनेकी सार्थक कला के लियेअवश्य सुनिये

निर्माता

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर

निर्देशन

विराग शास्त्री, जबलपुर

संपर्क सूत्र

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल, जबलपुर म.प्र.

मो. 9300642434 email . kahansandesh@gmail.com, chehaktichetna@yahoo.com